Bhajan

02

राम अब स्नेह सुधा बरसा दे

राम अब स्नेह सुधा बरसा दे ॥

भक्ति बदलिया उमड़ झूमती,
झड़ियां सरस लगा दे ॥१॥

घट में घटा घन नाम गर्ज से,
मन मयूर नचा दे ॥२॥

परम धाम की कृपा परा का,
पानी पूर बहा दे ॥३॥

पाप ताप से तप्त हृदय-मन,
शीतल शांत बना दे ॥४॥

मैया मोहे मंगल दर्शन दीजै

मैया मोहे मंगल दर्शन दीजै ॥

विमल तेजोमयी मधुर मूर्ति,
    मनोगमा में निहारूं ।
ममता मन्दिर में माँ मेरी,
    अपना मुझे कर लीजै ॥१॥

भले भाव भीतर सब जागें,
    भक्ति भाव भर आवे ।
भारी भरोसा भगवति पाऊँ,
    ऐसी करूणा कीजै ॥२॥

तेरा प्रेम बसे अंग अंग में,
    तेरा राग अलापूं ।
वे मैं कर्म करूं जिस से तू,
    मुझ पर मैया रीझै ॥३॥

राम, अब ऐसा वर मैं पाऊँ

राम, अब ऐसा वर मैं पाऊँ ॥

दया दान दो परम देव जी,
वरदा दृष्टि पसारो ।
देव द्वार का जिस से सदा मैं,
दासानुदास कहाऊँ ॥१॥

ध्रुव धारणा धारूं तुझ में,
आशा एक भरोसा ।
अचल चूल वत निश्चल निश्चय,
परा प्रीति उर लाऊँ ॥२॥

एक भक्ति हो भगवन तेरी,
दूसरा देव न देखूं ।
राम नाम में लगन लगा कर,
दुविधा दूर भगाऊँ ॥३॥

अपने पथ पर आप चलाओ

अपने पथ पर आप चलाओ,
पथ पतन ना पाऊँ मैं ॥

पावन पथ है परम प्रभु तेरा,
उस से पैर हटे न मेरा ।
पर पंथों की पगडंडी पर,
स्वपनों में भी न जाउँ मैं ॥१॥

तेरे पथ का पथिक मैं प्राणी,
संशय वश न पाउँ हानि ।
पग पग पर डग मग न डोलूं,
प्रेम प्रबल उर लाउँ मैं ॥२॥

अब मुझे राम भरोसा तेरा

अब मुझे राम भरोसा तेरा ॥

मधुर महारस नाम पान कर,
मुदित हुआ मन मेरा ॥१॥

दीपक नाम जगा जब भीतर,
मिटा अज्ञान अन्धेरा ॥२॥

निशा निराशा दूर हुई सब,
आई शांत सबेरा ॥३॥

जपो जी नित्य राम राम श्रीराम

जपो जी नित्य राम राम श्रीराम ॥

अशरण शरण अघ हरण चरण में,
मिले शांति विश्राम ॥१॥

चिंतन ध्यान जाप का करना,
गाना हरि गुण ग्राम ।
सुरति शब्द संयोग रूप यह,
सहज योग है नाम ॥२॥

राम राम मय नाद मधुरतम,
जब हो बिना विराम ।
तब समझो कर निश्चय पूर्ण,
सुधर गये सब काम ॥३॥

राम शब्द जब चले निरंतर,
भीतर आठों याम ।
सत्य समझिए फले मनोरथ,
मिला परम पद धाम ॥४॥

भजिए राम नाम सुखदाई

भजिए राम नाम सुखदाई ॥

भ्रम भय संशय भूल सर्व तज,
भक्ति भाव उर लाई ॥१॥

मानव जन्म अमोलक पा कर,
उत्तम करिए कमाई ॥२॥

अमृत राम नाम मधुरतम,
सिमरो सुरती टिकाई ॥३॥

पाप ताप परिहरण-शरणवर,
सब दिन जो है सहाई ॥४॥

अब मैं ने रसना का फल पाया

अब मैं ने रसना का फल पाया ।
भाव चाव से राम राम जप,
अपना आप जगाया ॥१॥

राम राम की ध्वनि लगन में,
लव लीनता ला कर ।
राम नाम मधुरतम जप कर,
जीवन सफल बनाया ॥२॥

राम नाम रस चख रसना ने,
रस सरसानी हो कर ।
सभी रसों का सार सुधा सम,
राम प्रेम बसाया ॥३॥

राम नाम विलसे रसना पर,
निश दिन साँझ सवेरे ।
चलते फिरते सोते जगते,
सनी नाम से काया ॥४॥

भले भाव भीतर भर आये,
भक्ति भाव उमड़ाया ।
चम चम चमकी चित्त चारूता,
निश्चय चांद चढ़ आया ॥५॥

भज मन रामं मह्। अभिरामम्

भज मन रामं मह्। अभिरामम् ॥

अस्ति भाति शुचि प्रियस्वरूपम् ।
त्रिगुणातीतं चैतन्य रूपम् ।
जगदाधारं जगद् विरामम् ॥१॥

शक्तिमयं पुरूषोत्तम ईशम् ।
भक्त-वत्सलं श्री जगदीशम् ।
पूर्ण पुरूषं पूर्ण कामम् ॥२॥